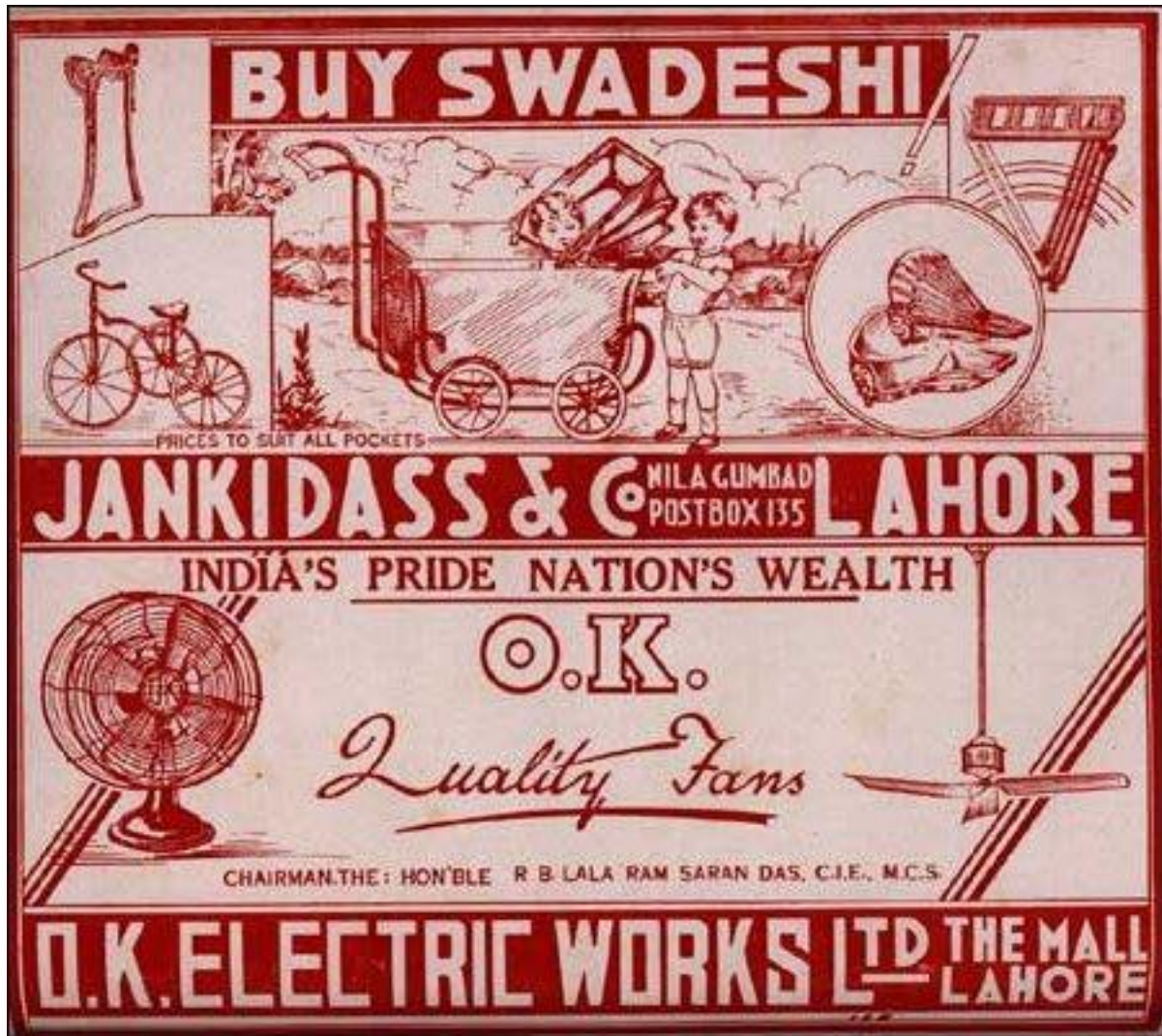


स्वदेशी दर्शन और उसमें निहित शक्ति

कई बार कुछ लोग कहते हैं कि इस देश का कुछ नहीं हो सकता! उन्हें लगता है कि अब हमारे देश में कोई सुनहरी सुबह नहीं आ पायेगी। यह सत्य नहीं है। विश्व में कई ऐसे देश हुए हैं जो भारत जैसी गुलामी से पीड़ित रहे लेकिन फिर भी आज खुद को एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में सफल सिद्ध हुए हैं। प्रस्तुत लेख भाई राजीव दीक्षित जी के एक भाषण का लिखित स्वरूप है जिसमें मुख्य बिंदुओं की संक्षेप में चर्चा की गई है। आप इस व्याख्यान को श्रीमुख से नीचे दिए गए लिंक पर भी सुन सकते हैं।

https://docs.google.com/file/d/0B8n_36gK-KF4bXNHQ29RVkVkZ2c/edit?usp=sharing



14वीं शताब्दी में पूरे यूरोप में दो ही राष्ट्र सबसे शक्तिशाली थे - पुर्तगाल और स्पेन। ये दोनों ही देश अन्य छोटे देशों को लूट कर उनकी संपत्ति से अपने राष्ट्रीय कोष को भरा करते थे। इन दोनों देशों की आपस में नहीं बनती थी और अक्सर इन दोनों देशों के बीच खूनी टकराव की स्थिति रहती थी। एक बार इन दोनों देशों ने इस रंजिश को खत्म करने के लिए एक संधि की। संधि के अंतर्गत भूलोक को दो हिस्सों में बाँट दिया गया - पूर्वी तथा पश्चिमी। पूर्वी भूलोक में भारत, चीन जैसे देश आ गए और पश्चिमी भूलोक में अमरीका, लैटिन अमरीका जैसे पश्चिमी देश आ गए। अब तय यह हुआ कि पश्चिमी देशों को स्पेन लूटेगा और पूर्वी देशों को पुर्तगाल! यही कारण था कि कोलंबस अमरीका को लूटने निकला तो वास्को डी गामा भारत को!

कोलंबस जब अमरीका को लूटने निकला तो उसकी नज़र पड़ी एक छोटे से देश पर जिसका नाम था क्यूबा। आप दुनिया के मानचित्र पर देख सकते हैं कि क्यूबा एक बेहद छोटा सा देश है, जो चारों तरफ समुद्र से घिरा हुआ है और USA का पड़ोसी है। यह देश 15वीं शताब्दी तक बहुत संपन्न देश था और यहाँ अपनी एक संस्कृति थी। 28 अक्टूबर 1492 को कोलंबस, क्यूबा के एक शहर हवाना पहुँचा और उसने यहाँ के राजा से मित्रता करने की पेशकश की। राजा मान गया और कोलंबस के जाल में फँस गया। कोलंबस ने रातों रात उसे धोखे से मरवा डाला और अपने 300 सैनिकों के साथ सोना, चांदी और प्लेटिनम लूट कर 150 जहाजों में लादकर स्पेन ले गया! यह सिलसिला रुका नहीं बल्कि कोलंबस के मरने के बाद भी जारी रहा। इस भारी लूटपाट और विदेशी अत्याचारों की वजह से क्यूबा में भुखमरी और बेरोज़गारी का बोलबाला हो गया। क्यूबा, 1492 से लेकर 1850 तक स्पैनिश लोगों का गुलाम रहा।

1850 में क्यूबा पर बुरी नज़र पड़ी अंग्रेज़ों की, जो किसी भी संधि के तहत नहीं थे। जब उन्हें यहाँ की सम्पदा और उपजाऊ जमीन का पता चला तो ये भी निकल पड़े क्यूबा की ओर। इसके बाद अंग्रेज़ों और स्पैनिश लोगों के बीच घमासान युद्ध हुआ जिसमें स्पैनिश लोग परास्त होकर भाग गए और शासन ब्रिटिश crown के अंतर्गत आ गया। अंग्रेज़ों ने जो कानून भारत और आयरलैंड को लूटने के लिए बनाये थे, वही कानून उन्होंने क्यूबा पर भी ठोक दिए! उदाहरणार्थ, अंग्रेज़ों का बनाया हुआ एक कानून है जिसे Land Acquisition Act (दुर्भाग्यवश यह कानून आज भी हमारे देश में लागू है!) कहते हैं, क्यूबा की 90% भूमि किसानों के हाथों से छीन कर अंग्रेज़ों ने हथिया ली! इसी के साथ साथ उन्होंने अंग्रेज़ी भाषा के जरिए क्यूबा की संस्कृति को तहस नहस करने की कोशिश की। वहाँ का कपास ब्रिटेन ले जाकर तैयार माल वापिस क्यूबा में लाकर बेचा जाने लगा। क्यूबा के लोग जिन चीज़ों का उत्पादन करते थे, उस पर भारी कर लगाया जाता था और ब्रिटिश माल कर मुक्त होने की वजह से सस्ता होता था! यही नहीं, गुड़ से लेकर धातुओं तक में तैयार माल क्यूबा में लाकर बेचा जाता था। इन आर्थिक और सामाजिक शोषणों से क्यूबा बुरी तरह आप्लावित था!

इस शोषण के विरुद्ध क्यूबा के नागरिकों ने आवाज़ उठाई और उन्होंने नारा दिया स्वदेशी का। क्यूबा के लोगों में स्वदेशी का दर्शन जूनून की हद तक सवार था! उन्होंने खुले आम विदेशी तैयार माल का बहिष्कार करना शुरू कर दिया और अपने देश की बनी वस्तुओं का अधिक से अधिक उपयोग करने लगे चाहे वे कितनी ही महँगी क्यों न हों! एक समय तो ऐसा आया जब क्यूबा में ठण्ड से बचने के लिए स्वदेश निर्मित गर्म कपड़े नहीं थे, फिर भी कई लोगों ने ठण्ड में अपनी जान गँवाई, यह कहते हुए कि मर जाएंगे पर विदेशी उपयोग नहीं करेंगे! लोगों ने अपने नाम से लेकर दैनिक संवाद और संभाषण क्यूबिक भाषा में शुरू कर दिए।

चूँकि अमरीका, अंग्रेज़ों का गुलाम कई वर्षों तक रहा, उसने सोचा कि क्यों न क्यूबा की मदद की जाए और उसके बाद उसे अपने अधीन रखा जाए। उसने अपनी कूटनैतिक नीति के अनुसार क्यूबा को सैन्य सहायता देने की पेशकश की जिसे क्यूबा के लोगों ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इस तरह अंग्रेज़ों और अमरीकियों के बीच एक युद्ध हुआ 1898 में, जिसमें अंग्रेज़ हार गए और उन्हें क्यूबा को सत्ता सौंपनी पड़ी सन 1903 में। इसके बाद क्यूबा में शोषण का तीसरा दौर आरम्भ हुआ और इस बार शासक था अमरीका! क्योंकि क्यूबा आर्थिक रूप से पूरी तरह ध्वस्त हो चुका था, उसने अमरीका से सहायता लेनी शुरू की और अमरीका उसे कर्ज़ देने लगा। कुछ संधियाँ ऐसी हुईं जिसमें क्यूबा को समझ आ गया कि अब नहीं जागे तो आने वाली पीढ़ी बर्बाद समझो! इसके बाद उन्होंने फिर कमर कसी और स्वदेशी का नारा दिया। बहुत जद्दोजहद के बाद क्यूबा अंततः 1959 में आज़ाद हुआ और एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में स्थापित हुआ। इस पूरी कहानी से हमें दो सीख मिलती हैं:

1. गुलामी चाहे शारीरिक, कानूनी, आर्थिक, सामाजिक या मानसिक हो; स्वदेशी का दर्शन वो अस्त्र है जिसकी सहायता से हम ये सारी बेडियाँ काट सकते हैं!
2. हर पश्चिमी देश की शासन करने और लूटने का अपना तरीका होता है। कुछ देश कानून लागू करके शोषण करते हैं, जैसे ब्रिटेन। कुछ मैत्री करके सीधे तौर पर लूटते हैं, जैसे पुर्तगाल और स्पेन। तो कुछ आर्थिक नीतियों जैसे कर्ज़ देकर, रोज़गार देकर आर्थिक रूप से दूसरों को गुलाम बनाने की चेष्टा करते हैं, जैसे अमरीका।

10वीं शताब्दी में मलेशिया के भारत के साथ प्रगाढ़ मैत्री संबंध थे। दक्षिण भारत में एक प्रतापी राजा थे, राजा राजेन्द्र चोल, जो मलेशिया की बहुत व्यापारिक सहायता किया करते थे। मलेशिया में यदि मलय लोगों के बाद सबसे अधिक जनसंख्या है तो वो तमिल लोगों की और उसके बाद मलयाली यानी केरल के लोगों की ही है! 1511 में एक पुर्तगाली लुटेरा मलेशिया आया जिसका नाम था वास्को डी गामा। हमें पढ़ाया जाता रहा है कि वह एक नाविक था परंतु सच्चाई यह है कि उसे नाव चलानी आती ही नहीं थी! वह पुर्तगाल से एक भारतीय नाविक को पकड़ कर लाया था मलेशिया और यहाँ से रबड़, टिन तथा सोना लूट कर वापिस पुर्तगाल ले गया। उसके बाद वह फिर 300 सैनिक लेकर मलेशिया आया और वहाँ के ज़मींदार, जो कि वहाँ के राजा को पसंद नहीं करते थे, उनके साथ मिलकर छोटे मोटे इलाके जीतने लगा। धीरे धीरे पूरे मलेशिया में पुर्तगाली शासन लागू हो गया। यह सिलसिला चला 18वीं शताब्दी तक जब पुर्तगालियों को हटा कर अंग्रेज़ आ गए। यहाँ भी उन्होंने वही किया जो अन्य देशों में किया, लूटने के कानून मलय लोगों पर ठोक दिए। इसके बाद मलेशिया में भी स्वदेशी आन्दोलन शुरू हुआ और अंततः 1957 में मलेशिया अंग्रेज़ों के चंगुल से मुक्त हुआ!

दुनिया में कुल 71 ऐसे देश हैं जो कभी न कभी किसी विदेशी शक्ति के गुलाम रहे। इनमें से अधिकतर देश आज खुद को विश्व पटल पर स्थापित करने में सफल हुए हैं। इन सभी देशों में एक चीज़ समान थी और वो यह कि इन सभी देशों ने विदेशी शासन से मुक्त होने के बाद अपनी राष्ट्रभाषा को कार्यकारिणी के रूप में स्थापित किया और वे समाज के हर क्षेत्र में स्वावलंबी बने! जिन्हें अर्थव्यवस्था में core sectors कहा जाता है (खदानें, भूसंपत्ति, खनिज, धातु, प्राकृतिक संसाधन जैसे वन आदि), इन देशों ने उसको अपने नियंत्रण में ही रखा ताकि उनकी स्वतंत्रता पर फिर से कोई प्रश्न चिन्ह न लग सके। इन सभी देशों में केवल और केवल भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जिसने आज़ादी के 63 सालों बाद भी अपनी खुद की मज़ी और दूरदृष्टि के अभाव में अपने ही पैरों में विदेशी बेड़ियाँ डाल रखी हैं! हमारे core sectors विदेशियों के हाथों बिके हुए हैं, सेवा के क्षेत्र में विदेशी हैं, FMCG में विदेशी कंपनियाँ हैं, दवाईयों में विदेशी कंपनियाँ हैं, पहनावे और रहन सहन में विदेशी कंपनियाँ हैं, Technology में विदेशी कंपनियाँ हैं और इस तरह 5000 से भी अधिक विदेशी कंपनियाँ इस समय भारतीय अर्थव्यवस्था के साथ खेल रही हैं! Amway, Unilever, Pepsi, Coca Cola, Reebok, Nike, Nestle जैसी कंपनियाँ जो 0 तकनीकी समान बनाती हैं, देश से

हज़ारों करोड़ रूपए एक ही साल में बाहर खींच लेती हैं और फैशन के मारे देश को लुटते देने में भागीदार बनते हैं! यदि आपके मन में थोड़ा सा भी अपने देश के प्रति प्रेम है, यदि आप चाहते हैं कि हमारा अपना देश सिर उठा कर पूरी दुनिया का सिरमौर बने, यदि आप कोई क्रांतिकारी नहीं हैं लेकिन देश के लिए कुछ करना चाहते हैं सीमित दायरों में तो आज से ही एक प्रण लें कि चाहे कुछ भी हो जाए परंतु अपने देश को ऐसे लुटने नहीं दूँगा/ दूँगी! यथासंभव यदि कोई स्वदेशी विकल्प उपलब्ध होगा तो विदेशी वस्तु नहीं खरीदूँगा/ खरीदूँगी! स्वदेशी और विदेशी वस्तुओं की सूची आप नीचे दिए गए लिंक पर देख सकते हैं:

<http://www.bharatswabhimantrust.org/bharatswa/Pdf/Hindi/New%20Swdeshi%20&%20Videshi%20List-15-03-2011.pdf>

इतना काम तो हम सब मिलकर कर ही सकते हैं। हम यदि मार्केट से मांग ही खत्म कर दें विदेशी वस्तुओं की तो इन सभी कंपनियों को यहाँ से पलायन करना ही होगा और इस तरह हमारे अपने ही देश में अपने ही पैसे से निर्मित और भी अच्छे विकल्प उपलब्ध होंगे जिससे रोज़गार के क्षेत्र में अधिक व्यवसाय स्थापित होंगे और हमारा देश पुनः वैभवशाली बन सकेगा!

जय भारत!

